नवभारत
इंदौर, रविवार, 14 सितंबर 2025

विकसित भारत 2047 में ज्योतिष

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

ज्योतिष भारतीय संस्कृति की आत्मा है. यह केवल ग्रह-नक्षत्रों की गणना का विज्ञान नहीं, बल्कि मनुष्य और ब्रह्माण्ड के बीच संबंध की गहनतम खोज है. वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक ज्योतिष ने भारतीय समाज को मार्गदर्शन दिया है. जीवन के हर आयाम—शिक्षा, विवाह, यात्रा, राजनीति, कृषि, चिकित्सा और अध्यात्म—में ज्योतिष की उपस्थिति रही है. आज जब भारत विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ रहा है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि इस भविष्य में ज्योतिष की क्या भूमिका होगी. क्या यह केवल एक परम्परागत विश्वास रह जाएगा या विज्ञान और तकनीक के संगम से यह और भी प्रासंगिक हो उठेगा? उत्तर स्पष्ट है—2047 का भारत ज्योतिष को न केवल अपने सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संजोएगा बल्कि उसे आधुनिकता और वैज्ञानिकता के परिप्रेक्ष्य में पुनर्स्थापित करेगा.

भारत जब स्वतंत्र हुआ था तो ज्योतिष को अक्सर अंधविश्वास और अंधश्रद्धा से जोड़कर देखा गया. परन्तु धीरे-धीरे यह धारणा बदल रही है. विश्वविद्यालयों में ज्योतिष विषय पर पाठ्यक्रम चल रहे हैं, शोध हो रहे हैं और डिजिटल तकनीक ने इसके स्वरूप को बिल्कुल बदल दिया है. 2047 तक यह परिवर्तन और गहरा होगा. पंचांग अब केवल मुद्रित पुस्तिकाओं में नहीं मिलेगा बल्कि रियल टाइम अपडेटेड डिजिटल पंचांग के रूप में हर नागरिक की जेब में मौजूद होगा. यह पंचांग इसरो के उपग्रह आंकड़ों और वैश्विक खगोल विज्ञान संस्थानों के डाटा से जुड़ा होगा. विवाह के लिए मुहूर्त निकालना हो, कोई पर्व मनाना हो या फिर कृषि कार्य के लिए उपयुक्त समय जानना हो—सभी के लिए यह डिजिटल पंचांग सहज रूप से मार्गदर्शन करेगा.

शैक्षिक दृष्टि से ज्योतिष का भविष्य अत्यंत व्यापक होगा. वर्तमान में भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में ज्योतिष शास्त्र को स्नातक और परास्नातक स्तर पर पढ़ाया जा रहा है. 2047 तक यह अध्ययन और भी गहरा और बहुविषयक हो जाएगा. ज्योतिष का गणित और खगोल विज्ञान से तो सीधा संबंध है ही, इसके साथ-साथ मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, जीवविज्ञान और डेटा विज्ञान से भी इसे जोड़ा जाएगा. यह ज्योतिष को अंधविश्वास की श्रेणी से बाहर निकालकर एक गंभीर बौद्धिक और वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत करेगा. विकसित भारत 2047 में सम्भव है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोलॉजिकल स्टडीज़ जैसे विशेष शोध केंद्र स्थापित हों जहाँ प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण, अनुवाद और आधुनिक विज्ञान से तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा. इस प्रकार वराहमिहिर की बृहत संहिता, आर्यभट की आर्यभटीय और भास्कराचार्य की सिद्धांत शिरोमणि जैसे ग्रंथों की गणनाएँ आधुनिक खगोल विज्ञान और भौतिकी से तुलना की जाएँगी.

सामाजिक स्तर पर ज्योतिष का स्वरूप पहले से कहीं अधिक सकारात्मक होगा. अब तक बहुत से लोग इसे भाग्यवाद और नियति से जोड़कर देखते रहे हैं. परन्तु विकसित भारत 2047 में ज्योतिष को जीवन मार्गदर्शन और परामर्श की प्रणाली के रूप में स्वीकारा जाएगा. यह केवल भविष्यवाणी करने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि लोगों को अपनी क्षमताओं को पहचानने और परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित करेगा. विद्यार्थी ज्योतिष के आधार पर अपनी रुचियों और योग्यताओं को समझ पाएँगे, जिससे वे सही करियर का चुनाव कर सकेंगे. स्वास्थ्य क्षेत्र में ज्योतिष चिकित्सा विज्ञान और आयुर्वेद के साथ मिलकर निवारक उपाय प्रदान करेगा. उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में मानसिक तनाव की प्रवृत्ति प्रबल है तो उसे ध्यान, योग और आहार संबंधी सुझावों के साथ संतुलित जीवनशैली की ओर प्रेरित किया जा सकेगा. तकनीकी उन्नति ने ज्योतिष को भविष्य के लिए और भी सक्षम बना दिया है. 2047 तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और क्वांटम कंप्यूटिंग के उपयोग से ज्योतिषीय गणनाएँ अत्यधिक सटीक और व्यक्तिगत होंगी. आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता जैसे साधनों से लोग अपनी जन्मकुंडली और ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति को प्रत्यक्ष अनुभव कर पाएँगे. यह अनुभव ज्योतिष को अधिक जीवंत और वैज्ञानिक बनाएगा. मोबाइल एप्स न केवल मुहूर्त और भविष्यफल बताएँगे बल्कि स्वास्थ्य, वित्तीय निवेश और व्यक्तिगत निर्णयों तक के लिए सुझाव देंगे.

लेकिन इन संभावनाओं के साथ नैतिकता और विधिक नियमन भी उतना ही आवश्यक होगा. 2047 के भारत में यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ज्योतिष शोषण और अंधविश्वास का साधन न बने. इसके लिए ज्योतिषियों का प्रमाणन और लाइसेंसिंग अनिवार्य होगी. केवल वही लोग पेशेवर ज्योतिषी कहलाएँगे जिन्हें मान्यता प्राप्त संस्थान से प्रशिक्षण और परीक्षा द्वारा योग्यता सिद्ध करनी होगी. एक आचार-संहिता बनेगी जो यह सुनिश्चित करेगी कि ज्योतिषी भय का व्यापार न करें बल्कि सकारात्मक और यथार्थवादी मार्गदर्शन दें. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत ज्योतिषीय परामर्श को शामिल किया जाएगा ताकि आम नागरिक सुरक्षित रहें. वैश्विक स्तर पर ज्योतिष भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर का महत्वपूर्ण अंग बनेगा. जिस प्रकार योग और आयुर्वेद ने भारत की वैश्विक पहचान को नया आयाम दिया है, उसी प्रकार ज्योतिष भी भविष्य में भारत का गौरव बढ़ाएगा. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, शोध कार्यशालाओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय ज्योतिष की गहराई और प्रासंगिकता दुनिया के सामने रखी जाएगी.

> इतिहास की दृष्टि से भी 2047 का ज्योतिष भारत की निरंतरता का प्रतीक होगा. आर्यभट ने जब पहली बार शून्य और ग्रहों की गति की गणना की थी, तब से लेकर आज तक ज्योतिष ने अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी है. कल का पंचांग और आज का मोबाइल एप—दोनों उसी परम्परा के प्रतीक हैं. भविष्य में भी यह परम्परा जीवित रहेगी, परन्तु नए स्वरूप में. विकसित भारत 2047 का ज्योतिष न केवल परम्परा होगा, बल्कि आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग होगा. अंतत: यह कहा जा सकता है कि विकसित भारत 2047 में ज्योतिष भारत की सांस्कृतिक आत्मा और वैज्ञानिक चेतना दोनों का संगम होगा. यह व्यक्ति को आत्म-ज्ञान देगा, समाज को संतुलन और मार्गदर्शन प्रदान करेगा और राष्ट्र को सांस्कृतिक गौरव के साथ भविष्य की ओर अग्रसर करेगा. ज्योतिष न तो अंधविश्वास होगा और न ही केवल एक पुरानी परम्परा, बल्कि यह एक जीवंत, वैज्ञानिक और सामाजिक रूप से उपयोगी ज्ञान प्रणाली होगी. इसी में भारत की आत्मा का विस्तार और भविष्य की दिशा दोनों निहित हैं.

सुखी जीवन के लिए वास्तु सिद्धांत और उपाय

सुखी और सुकून भरा जीवन जीने के लिए घर में पंचतत्वों का संतुलित होना अनिवार्य है. घर की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी तत्व का प्रतिनिधित्व करती है. यदि घर वास्तु के अनुसार व्यवस्थित होता है तो इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का वास रहता है और घर में रहने वाले सदस्य निरोग, सुखी धनवान बनते हैं. वास्तु सिद्धांत के अनुसार वास्तु दोषों को दूर करने अथवा कम करने में आपके घर की आंतरिक साज-सज्जा मददगार साबित हो सकती है. घर में सुख-शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण के लिए कुछ वास्तु नियमों को अपनाया जा सकता है.

- घर में पूजा किस दिशा में होती है इसे बहुत महत्वूपर्ण माना गया है. यदि ये सही जगह पर न हो या पूजाघर की दिशा में अन्य कोई भारी सामान रखा हुआ है तो इससे बहुत ही नकरात्मक प्रभाव घर पर पड़ता है. मन की शांति और घर के चौमुखी विकास के लिए पूजाघर का स्थान उत्तर-पूर्व यानी ईशान कोण पर ही होना चाहिए.
- सब कुछ ठीक होने के बाद भी आपको लगता है कि हमारे हाथ में धन नहीं रुकता तो आपको अपने घर के दक्षिण-पूर्व दिशा क्षेत्र से नीला रंग हटाने की ज़रुरत है. इस दिशा में हल्का नारंगी, गुलाबी रंगों का प्रयोग करें.
- घर के अंदर लगे हुए मकड़ी के जाले, धूल-गंदगी को समय-समय पर हटाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा नहीं रहती.
- पार्किंग हेतु उत्तर-पश्चिन स्थान प्रयोग में लाना शुभ माना गया है.
- घर में बनी हुई क्यारियों या गमलों में लगे हुए पौधों को नियमित रूप से पानी देना चाहिए. यदि कोई पौधा सूख जाए तो उसे तुरंत वहां से हटा दें.
- दक्षिण-पश्चिम दिशा में ओवरहैड वाटर टैंक की व्यवस्था करना लाभप्रद रहता है.
- दरवाज़े को खोलते तथा बंद करते समय सावधानी से बंद करें, ताकि कर्कश ध्वनि न निकले.

पितरों की कृपा पाने के लिए लगाएं ये विशेष पेड़

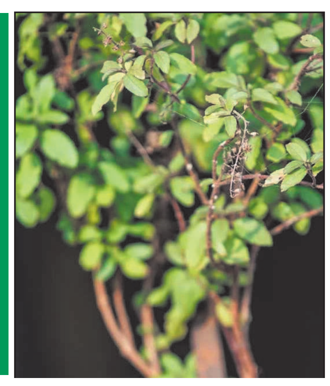

सनातन धर्म में पितृपक्ष का विशेष महत्व है. यह वह 15-दिवसीय अवधि है जब पितरों को याद किया जाता है और उन्हें तर्पण, दान तथा पूजा के माध्यम से प्रसन्न करने का शुभ समय होता है. इस साल पितृपक्ष 7 सितंबर से शुरू होकर 21 सितंबर तक रहेगा. ज्योतिष विशेषज्ञों का मानना है कि इस दौरान कुछ विशेष पेड़-पौधों को घर में लगाना और उनकी पूजा करना पितरों की कृपा प्राप्त करने का सर्वोत्तम तरीका है.

ज्योत्षी के अनुसार, पितृपक्ष में कुछ विशेष पौधों को लगाने और उनकी नियमित पूजा करने से परिवार में सुख-शांति और समृद्धि आती है. इन पौधों में पीपल, बरगद और तुलसी का विशेष महत्व है. पीपल में पितरों का वास माना जाता है. इस दौरान पीपल के नीचे जल अर्पित करना और दीपक जलाना अत्यंत शुभ होता है. अगर किसी पवित्र स्थान पर पीपल का पौधा लगाया जाए, तो अधूरे कार्य पूरे होते हैं और घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है.

वहीं, बरगद को दीर्घायु और मोक्ष प्रदान करने वाला वृक्ष माना जाता है. डॉ. वर्मा कहते हैं, बरगद का पौधा लगाने से पितृ प्रसन्न होते हैं और जीवन में आने वाली परेशानियां कम होती हैं. विशेष रूप से पितृपक्ष में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है.

तुलसी को हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना गया है. परंपराओं के अनुसार, मृतक के मुख में तुलसी का दल रखने से उसकी आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है. ज्योतिषाचार्य बताते हैं, पितृपक्ष में तुलसी का पौधा लगाकर रोजाना उस पर जल चढ़ाने से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं और पितरों का आशीर्वाद मिलता है. तुलसी के आसपास सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और घर में सुख-शांति बनी रहती है.

> विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि इन पौधों की देखभाल और पूजा के साथ-साथ इस अवधि में दान और तर्पण करना अत्यंत लाभकारी होता है. इससे पितर प्रसन्न होते हैं.

17 सितंबर को मनाई जाएगी विश्वकर्मा पूजा

साल 2025 में विश्वकर्मा पूजा 17 सितंबर, बुधवार को पड़ रही है. इस दिन शिल्पकार, इंजीनियर, कारीगर और मजदूर अपने औजारों, मशीनों और कार्यस्थल की पूजा करते हैं. कन्या संक्रांति 2025 का क्षण 17 सितंबर, बुधवार को सुबह 1:55 बजे रहेगा.

पूजा विधि- इस दिन सुबह उठकर अपनी मशीनों और औजारों की सफाई करें. सभी मशीनों को बंद कर उनकी पूजा करें. भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति स्थापित करें. भगवान को भोग और प्रसाद अर्पित करें. इस दिन जरूरतमंदों को दान और भोजन कराएं.

विश्वकर्मा जयंती का महत्व- इस दिन लोग अपनी फैक्ट्री और कारखानों की पूजा करते हैं. जो लोग लैपटॉप या मोबाइल पर काम करते हैं, वे भी उनकी पूजा करते हैं. मान्यता है कि इस दिन पूजा-अर्चना करने से व्यापार में समृद्धि आती है.

भगवान विश्वकर्मा ने की थी इन चीजों की रचना- ऋग्वेद में भगवान विश्वकर्मा को ब्रह्मांड के वास्तुकार और रचनात्मकता के मूर्त स्वरूप के रूप में वर्णित किया गया है. उन्होंने सृष्टि-सृजन में भगवान ब्रह्मा की सहायता की थी. भगवान विश्वकर्मा ने द्वारका नगरी, पांडवों के लिए इंद्रप्रस्थ महल, सुदामापुरी और स्वर्णमयी लंका का निर्माण किया था. इसके अलावा, उन्होंने देवताओं के लिए अनेक अस्त्र-शस्त्रों की भी रचना की थी, जिनमें भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र, भगवान शिव का त्रिशूल और भगवान कार्तिकेय का भाला शामिल है.

इस बार 10 दिनों की होगी नवरात्रि, हाथी पर आएंगी मां दुर्गा

> जब माता रानी हाथी पर सवार होकर धरती पर आती हैं, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में समृद्धि और सुख का संकेत देता है, बल्कि समाज और देश में भी स्थिरता और खुशहाली का प्रतीक होता है.

हिंदू धर्म में नवरात्रि का पर्व विशेष महत्व रखता है. हर साल आश्विन माह में मनाया जाने वाला शारदीय नवरात्रि देवी दुर्गा की पूजा और उनके नौ रूपों के आराधन का पर्व है. इस बार नवरात्रि 22 सितंबर 2025 से शुरू होकर 2 अक्टूबर 2025 को समाप्त होगी. खास बात यह है कि चतुर्थी तिथि में वृद्धि के चलते नवरात्रि इस बार दस दिन की होगी.

विशेष रूप से इस साल मां दुर्गा हाथी (गज) पर सवार होकर पृथ्वी लोक में आगमन करेंगी. ज्योतिषियों के अनुसार, हाथी पर सवार माता रानी का आगमन सुख, समृद्धि और उन्नति का प्रतीक है. यह संकेत देता है कि देश और घर में धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहेगी. ऐसे अवसर पर घटस्थापना और पूजा का शुभ मुहूर्त अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है.

ज्योत्षी बताते हैं कि जब माता रानी हाथी पर सवार होकर धरती पर आती हैं, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में समृद्धि और सुख का संकेत देता है, बल्कि समाज और देश में भी स्थिरता और खुशहाली का प्रतीक होता है. इस बार माता रानी का आगमन ऐसे समय पर हो रहा है जब देश वैश्विक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है. यह संकेत है कि आने वाले समय में सकारात्मक बदलाव और अवसर बनेंगे.

इस साल प्रतिपदा तिथि 22 सितंबर को रात 01:23 बजे से 23 सितंबर को 02:55 बजे तक रहेगी. घटस्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 06:09 से 08:06 बजे तक है. इसके अतिरिक्त अभिजित मुहूर्त सुबह 11:49 से दोपहर 12:38 तक रहेगा. घटस्थापना की कुल अवधि लगभग 49 मिनट की है. ज्योत्षी का मानना है कि हाथी पर सवार माता रानी का आगमन सकारात्मक ऊर्जा, सफलता और खुशहाली का संकेत है. इस दौरान घर में पूजा, घटस्थापना और माता की आराधना करना अत्यंत शुभ और फलदायी माना जाता है. यह नवरात्रि न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी लोगों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा.

शारदीय नवरात्रि कैलेंडर

- **22 सितंबर** - प्रतिपदा (मां शैलपुत्री)
- **23 सितंबर** - द्वितीया (मां ब्रह्मचारिणी)
- **24 सितंबर** - तृतीया (मां चंद्रघंटा)
- **26 सितंबर** - चतुर्थी (मां कूष्मांडा)
- **27 सितंबर** - पंचमी (मां स्कंदमाता)
- **28 सितंबर** - महा षष्ठी (मां कात्यायनी)
- **29 सितंबर** - महा सप्तमी (मां कालरात्रि)
- **30 सितंबर** - महा अष्टमी (मां महागौरी)
- **1 अक्टूबर** - महा नवमी (मां सिद्धिदात्री)
- **2 अक्टूबर** - विजयादशमी

राशिफल

दिनांक- 14 से 20 सितम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में ता. 17 को 5/54 दिन से कन्या राशि में, मंगल तुला राशि में, बुध सिंह राशि में ता. 15 को 10/50 दिन से कन्या राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र कर्क राशि में ता. 14 को 1/6 रात से सिंह राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृषभ मिथुन कर्क और सिंह राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 17 को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश् करता है जिसके प्रभाव से रूई, चांदी, अफीम में तेजी आकर मंदी होगी, सोना चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का योग बनेगा, घी, गुड़, खाड़ में तेजी होगी, शेयर बाजार में पहले तेजी बाद में मंदी के झटके आयेंगे.

पर्व/व्रत/त्यौहार :

रविवार	14 सितम्बर को	महालक्ष्मी व्रत, जीवत्पुत्रिका व्रत, अष्टमी श्राद्ध
सोमवार	15 सितम्बर को	मातृ नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
मंगलवार	16 सितम्बर को	दशमी श्राद्ध
बुधवार	17 सितम्बर को	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध
गुरूवार	18 सितम्बर को	सन्यासी श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध
शुक्रवार	19 सितम्बर को	प्रदोष व्रत, त्रियोदशी श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत
शनिवार	20 सितम्बर को	चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्राघात मृतक श्राद्ध

मेष

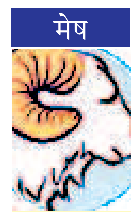

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी,अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े, सामाजिक क्षेत्रमें सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल करने की कोशिश होगी, किसी करीबी मित्र अथवा रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

वृषभ

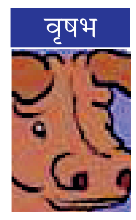

इस सप्ताह सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्यमें आप हाथ डालेंगे,सफलता मिलेगी,वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्तु आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

मिथुन

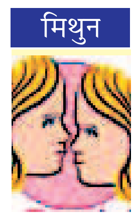

इस सप्ताह महत्वाकांक्षा बढ़ेगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, किसी पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कर्क

इस सप्ताह कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य को उचित मान प्रतिष्ठा सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा, आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, दाम्पत्य जीवन सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा, कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें, विरोधियों से सतर्क रहें.

सिंह

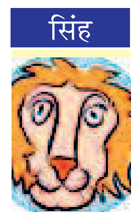

इससप्ताह व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दमीन की यात्रा पर जा सकते हैं, यात्रा के दौरान अनावश्यक खर्च से बचें, पुराना पैसा मिलने का योग है.

कन्या

इस सप्ताह प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेगे,अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमिथुन जायजाद की खरीदी बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, मीननेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

तुला

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, व्यवसायिक साझेदारों में सावधानी रखें, महत्पूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नईसंभावनायें देता है, नईसोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचारहोगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. आपसी मामले सावधानी से हल करें.

वृश्चिक

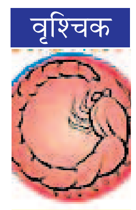

इस सप्ताह अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनों से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि भवन घर खरीदी बिक्री फायदेमंद रहेंगे, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं मीनकीय कारणों से की गई यात्रा मे बेहतर परिणाम होंगे.

धनु

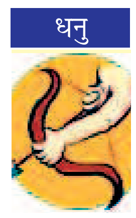

साझेदारों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में एवं प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सुलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा व्यक्तियों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्यपर विशेष ध्यान दें, घर में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मकर

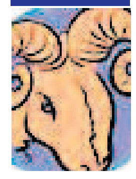

इस सप्ताह सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है, अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षाएं बढ़ सकती हैं, सौहार्द्रपूर्ण माहौल रहेगा, नये संबंध बनेंगे.

कुम्भ

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताहान्त में स्वास्थ्य में गिरावट की संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना शरीर साथ दे. भौतिक सुख साधनों में रूचि बढ़ेगी,

मीन

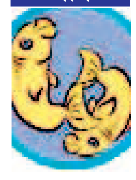

इस सप्ताह व्यापार यात्राऔर धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, सपफ्लता की ओर कदम बढ़ेंगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जानपहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बडी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता केअनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफ्लता मिलेगी.